Shiksha Samvad International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
© SSIJMR|Volume-02| Issue-04| June- 2025
Available online at: https://shikshasamvad.com/

किशोर बालिकाओं की स्वभावगत विशेषताओं, स्वास्थ्य एवं रचना एवं विद्योपार्जन स्तर पर पारिवारिक परिवेश के प्रभाव का अध्ययन

डॉ0 दीपा गुप्ता
असिस्टेंट प्रोफेसर, बी0एड0 विभाग, शहीद मंगल पांडे राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय माधवपुरम, मेरठ

सारांश :

व्यक्तित्व के विकास में परिवार का महत्वपूर्ण स्थान है। सकारात्मक पारिवारिक परिवेश बालिकाओं के आत्म विश्वास को बढाता है तथा उनका अपने प्रति स्वभावगत विषेशताओं, स्वास्थ्य एवं रचना एवं विद्योपार्जन स्तर उच्च होता है। वहीं नकारात्मक पारिवारिक परिवेश से बालिकाओं अपने अन्दर हीनता का अनुभव करता है। वह अपने आपको अन्य की तुलना में कमजोर तथा असहाय महसूस करता है। परिवारिक परिवेश बालिकाओं के स्व को विकसित करने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य पारिवारिक परिवेश का किशोर बालिकाओं के स्वभावगत विषेशताओं, स्वास्थ्य एवं रचना एवं विद्योपार्जन स्तर पर प्रभाव का अध्ययन करना हैं। इस हेतु मेरठ शहर के माध्यमिक विद्यालयों से कक्षा 10 में अध्ययनरत् कुल 100 बालिकाओं का चयन किया गया। तत्पश्चात् पारिवारिक परिवेश मापनी के आधार पर न्यादर्श को दो वर्गो यथा–सकारात्मक एवं नकारात्मक पारिवारिक परिवेश के बालिकाओं में विभाजित किया गया। इसमें सकारात्मक पारिवारिक परिवेश के 50 बालिकाओं एवं नकारात्मक परिवेश के 50 बालिकाओं का चयन किया गया। इन बालिकाओं की स्वभावगत विषेशताओं, स्वास्थ्य एवं रचना एवं विद्योपार्जन स्तर के बारे में जानने के लिए जी0पी0 शैरी, आर0पी0 वर्मा तथा पी0के0 गोस्वामी द्वारा निर्मित एवं प्रमापीकृत परीक्षण का प्रयोग कर तीन आयामों – स्वभावगत विषेशताओं, स्वास्थ्य एवं रचना एवं विद्योपार्जन स्तर से सम्बन्धित आंकडें एकत्रित किए गए। प्राप्त परिणाम यह इंगित करते हैं कि सकारात्मक पारिवारिक परिवेश का किशोर बालिकाओं के स्वभावगत विशेषताओं, स्वास्थ्य एवं रचना एवं विद्योपार्जन स्तर पर प्रभाव पड़ता है।

मूल शब्द: *उच्च स्तर, छात्र, ऑनलाइन शिक्षा, सर्वेक्षण विधि, यादृच्छिक विधि, दृष्टिकोण, स्व-निर्मित पैमाना।*

शिक्षा मानवीय जीवन का एक सुसंस्कृत एवं महत्वपूर्ण पक्ष है। शिक्षा द्वारा ही मनुष्य परिष्कृत एवं विवेकशील बनता है। बालिकाओं के व्यक्तित्व, व्यवहार, आदतों, रूचियों तथा अन्य सम्बन्धित पहलुओं के सदंर्भ में गृह का वातावरण प्रमुख भूमिका का निर्वाह करता है। पारिवारिक परिवेश में ही बालिकाओं के जीवन की मूल प्रवृत्तियों की संन्तुष्टि तथा विकास हो पाता है। बच्चे को प्रारम्भिक शिक्षा परिवार से मिलती है और माता उसकी शिक्षिका होती है। परिवारिक परिवेश बच्चे के संस्कारगत परिष्कार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। बच्चा अपने परिवार से आदर– संस्कार, प्रेम, सहिष्णुता, सदाचार की शिक्षा प्राप्त करता है। परिवारिक परिवेश बालक के हर पक्ष को प्रभावित करता है, यदि बालक को माता–पिता का सहयोग एवं घर का उचित व अनुकूल वातावरण मिलता है तो उसके व्यक्तित्व का उचित विकास होता है। उसके अन्दर

की शक्तियाँ, प्रतिभायें निखर कर आती है। गृह वातारण को परिभाषित करते हुये शाह महोदया ने कहा कि गृह के वे मानवीय तत्व जो बालक को चारों ओर से घेरे हुये होते है, वे गृह वातावरण कहलाते है तथा परिवार में समाहित सामाजिक, भौतिक और सांवेगिक गुण पारिवारिक परिवेश का निर्माण करते हैं।

व्यक्तित्व के विकास में परिवार का महत्वपूर्ण स्थान है। सकारात्मक परिवारिक परिवेश बच्चे के आत्म विश्वास को बढाता है तथा उनका अपने प्रति स्वभावगत विषेशताओं, स्वास्थ्य एवं रचना एवं विद्योपार्जन स्तर उच्च होता है। वहीं नकारात्मक पारिवारिक परिवेश से बच्चे अपने अन्दर हीनता का अनुभव करता है। वह अपने आपको अन्य की तुलना में कमजोर तथा असहाय महसूस करता है जिसके कारण उसका आत्म–सम्प्रत्यय बहुत निम्न हो जाता है और उसके व्यक्तित्व का पूर्ण विकास नही हो पाता है। परिवारिक परिवेश बच्चे के स्व को विकसित करने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। स्व किसी भी व्यक्ति के आन्तरिक पक्ष को अभिव्यक्त करता है तथा व्यक्तित्व का एक संगठित अभिकरण होता है। व्यक्ति का स्वयं के लिये सम्प्रत्यय ही स्व– प्रत्यय है। स्व– प्रत्यय व्यक्ति के व्यवहार व चिन्तन आदि को प्रभावित करता है।

खरे (1990) ने अपने अध्ययन में पाया कि जिन परिवारों का आर्थिक स्तर अच्छा होता है उन परिवारों के अभिभावक बालिकाओं को उच्च शिक्षा की ओर तथा रोजगार पाने के लिए प्रोत्साहित करतें हैं। बक्शी (2001) ने अपने अध्ययन में पाया कि बालक–अभिभावक सम्बन्ध का प्रभाव बालक के व्यक्त्वि के विकास पर पड़ता है। बालक एवं बालिकाओं के कार्यो का सम्पादन पूर्णतः अभिभावकों पर निर्भर करता है। सिंह (2004) ने हाईस्कूल के छात्रों का उनके परिवेश के परिप्रेक्ष्य में स्व – प्रत्यय का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया और पाया कि छात्रों के स्वप्रत्यय के विकास में स्थान का प्रभाव नहीं पड़ता है। पूर्व अध्ययनों से यह स्पष्ट है कि परिवेश बालिकाओं के आत्म और व्यक्तित्व को प्रभावित करता है उसके स्वभावगत विशेषताओ, स्वास्थ्य एवं रचना एवं विद्योपार्जन के स्तर को प्रभावित करता है। प्रस्तुत अध्ययन के अन्तर्गत इस तथ्य की प्रमाणिकता को ज्ञात करने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. सकारात्मक पारिवारिक परिवेश का किशोर बालिकाओं के स्वभावगत विशेषताओं पर प्रभाव का अध्ययन।
2. सकारात्मक पारिवारिक परिवेश का किशोर बालिकाओं के स्वास्थ्य एवं रचना पर प्रभाव का अध्ययन।
3. सकारात्मक पारिवारिक परिवेश का किशोर बालिकाओं के विद्योपार्जन स्तर पर प्रभाव का अध्ययन।
4. नकारात्मक पारिवारिक परिवेश का किशोर बालिकाओं के स्वभावगत विशेषताओं पर प्रभाव का अध्ययन।
5. नकारात्मक पारिवारिक परिवेश का किशोर बालिकाओं के स्वास्थ्य एवं रचना पर प्रभाव का अध्ययन।
6. नकारात्मक पारिवारिक परिवेश का किशोर बालिकाओं के विद्योपार्जन स्तर पर प्रभाव का अध्ययन।

परिकल्पना

प्रस्तुत अध्ययन हेतु निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है –

1. पारिवारिक परिवेश का किशोर बालिकाओं के स्वभावगत विशेषताओं पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
2. पारिवारिक परिवेश का किशोर बालिकाओं के स्वास्थ्य एवं रचना पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
3. पारिवारिक परिवेश का किशोर बालिकाओं के विद्योपार्जन स्तर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

शोधविधि

अध्ययन हेतु मेरठ शहर के माध्यमिक विद्यालयों से कक्षा 10 में अध्ययनरत् कुल 100 बालिकाओं का चयन किया गया। तत्पश्चात् पारिवारिक परिवेश मापनी के आधार पर न्यादर्श को दो वर्गो यथा सकारात्मक एवं नकारात्मक पारिवारिक परिवेश के बालिकाओं में विभाजित किया गया। इसमें सकारात्मक पारिवारिक परिवेश के 50 बालिकाओं एवं नकारात्मक परिवेश के 50 बालिकाओं का चयन किया गया।

उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में निम्न शोध उपकरणों का प्रयोग किया गया है :–

1. प्रस्तुत अध्ययन में स्वभावगत विषेशताओं, स्वास्थ्य एवं रचना एवं विद्योपार्जन स्तर से सम्बन्धित आँकड़े एकत्रित करने के लिये जी0पी0 शैरी, आर0पी0 वर्मा तथा पी0के0 गोस्वामी द्वारा निर्मित एवं प्रमापीकृत स्वत्व बोध परीक्षण का प्रयोग किया गया जो आठ आयामों – स्वभावगत विषेशताओं, स्वास्थ्य एवं रचना एवं विद्योपार्जन स्तर तथा अन्य आयामों से सम्बन्धित हैं।
2. पारिवारिक परिवेश जानने हेतु बीना शाह द्वारा निर्मित एवं प्रमापीकृत पारिवारिक परिवेश मापनी का प्रयोग किया गया जो पारिवारिक परिवेश के दस आयामों से सम्बन्धित हैं।

अध्ययन के परिणाम

तालिका – 1

सकारात्मक एवं नकारात्मक पारिवारिक परिवेश के बालिकाओं के स्वभावगत विशेषताओ, स्वास्थ्य एवं रचना एवं विद्योपार्जन स्तर में अन्तर दर्शातें मध्यमान, मानक–विचलन व टी– अनुपात :–

क्र0 सं0	आयाम	सकारात्मक पारिवारिक परिवेश पोषित बालिका		नकारात्मक पारिवारिक परिवेश पोषित बालिका		'टी' अनुपात
		मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	
1.	स्वभावगत विशेषतायें	4.62	1.07	3.18	1.36	5.76''
2.	स्वास्थ्य एवं रचना	4.38	1.21	3.34	1.45	3.85''
3.	विद्योपार्जन स्तर	6.74	1.12	3.22	2.03	10.67''

'' 0.01: सार्थकता स्तर पर सार्थक

तालिका से स्पष्ट होता है कि स्वभावगत विशेषताओं पर प्राप्त टी–मान (5.76) 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना 'पारिवारिक परिवेश का किशोर बालिकाओं के स्वभावगत विशेषताओं पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है' को अस्वीकृत किया जाता है। इसका आशय यह है कि सकारात्मक पारिवारिक परिवेश का बालिकाओं के स्वभावगत विषेशताओं पर प्रभाव पड़ता है। इसी प्रकार तालिका से यह भी स्पष्ट होता है कि स्वास्थ्य एवं रचना पर प्राप्त टी–मान (3.85) 0.01 स्तर पर सार्थक है। यहाँ पर भी शून्य परिकल्पना 'पारिवारिक परिवेश का किशोर बालिकाओं के स्वास्थ्य एवं रचना पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है' को अस्वीकृत किया जाता है। इसका आशय यह है कि सकारात्मक पारिवारिक परिवेश का बालिकाओं के स्वास्थ्य एवं रचना पर प्रभाव पड़ता है। इसी प्रकार तालिका से यह भी स्पष्ट होता है कि विद्योपार्जन स्तर पर प्राप्त टी–मान (10.67) 0.01 स्तर पर सार्थक है। यहाँ पर भी शून्य परिकल्पना 'पारिवारिक परिवेश का किशोर बालिकाओं के विद्योपार्जन स्तर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है' को अस्वीकृत किया जाता है। इसका आशय यह है कि सकारात्मक पारिवारिक परिवेश का बालिकाओं के विद्योपार्जन स्तर पर प्रभाव पड़ता है।

निष्कर्ष

सकारात्मक पारिवारिक परिवेश का किशोर बालिकाओं के स्वभावगत विषेशताओं, स्वास्थ्य एवं रचना एवं विद्योपार्जन स्तर पर प्रभाव पड़ता है।

प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त परिणाम अभिभावकों को दिशा निर्देश प्रदान करने मे सहायता प्रदान करेंगे। प्राप्त परिणामों के आधार पर अभिभावक परिवार में ऐसा वातावरण बनाने का प्रयास करें जिससे बालिकाओं के व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास हो सके। अभिभावक बालिकाओं को ऐसा वातावरण तथा प्रोत्साहन प्रदान करें जिससे बालिकाएं समाज, परिवार तथा विद्यालय के साथ समायोजित हो सके। इसलिए यह आवश्यक है कि अभिभावक बालिकाओं को स्नेह व सुरक्षा प्रदान कर उसकी समस्याओं को समझने का प्रयास कर उन्हे उचित दिशा निर्देश प्रदान करें। अभिभावक तथा सहोदर आपस में सहयोग पूर्ण व्यवहार व आचरण करें जिससे बालिकाओं में सही आचरण करने के प्रवृत्ति विकसित हो सके। अभिभावकों को चाहिये कि वे अपनी बालिकाओं के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध रखें, जिससे उनका संकोच, झिझक दूर हो ओर वे अपनी समस्या को समाधान आपसी विमर्श से खोज सकें। जहां तक सम्भव हो अभिभावक उनकी शैक्षिक आवश्यकतायें पूरी करके उनके विकास में सहयोग दे तथा बालिकाओं को तनावग्रस्त व कुंठित होने से बचायें।

संदर्भ सूची

1. आलपोर्ट, जी0 डब्ल्यू0 (1937) : पर्सनाल्टी, ए सायकोलॉजिकल इन्टरप्रटेशन, लंदन, कान्स्टेबल एण्ड कम्पनी लि0
2. गैरेट, एच0ई0 (2009) : शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग, नयी दिल्ली कल्याणी पब्लिशर्स
3. हरलॉक, ई0बी0 (1976) : 'पर्सनाल्टी डेवेलपमेण्ट', नई दिल्ली, टाटा मैग्रा हिल पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन
4. राइस, एफ0 फिलिप (1981) : द एडोलसेन्ट डेवलपमेन्टय रिलेशनशिप्स एण्ड कल्वर, यू0एस0ए0, एलन एण्ड बेकन।

CC BY NC ND This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved

Cite this Article:

डॉ0 दीपा गुप्ता, **"किशोर बालिकाओं की स्वभावगत विशेषताओं, स्वास्थ्य एवं रचना एवं विद्योपार्जन स्तर पर पारिवारिक परिवेश के प्रभाव का अध्ययन"**, *Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 2, Issue 4, pp.01-07, June 2025. Journal URL: https://shikshasamvad.com/*

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ0 दीपा गुप्ता

For publication of research paper title

“किशोर बालिकाओं की स्वभावगत विशेषताओं, स्वास्थ्य एवं रचना एवं विद्योपार्जन स्तर पर पारिवारिक परिवेश के प्रभाव का अध्ययन”

Published in ‘Shiksha Samvad’ Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-02, Issue-04, Month June 2025, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://shikshasamvad.com/